आनंद सरोवर में नये वास्तु का दादी जानकी जी के करकमलों द्वारा उद्घाटन

सभा को संबोधित करते हुये सभी दादीयाँ और अन्य वरिष्

शांतिवन (मधुबन) : रविवार 7 एप्रिल 2013 के दिन हमारे यज्ञ में एक और अध्याय जुड गया। इस सुनहरे दिन के अवसर पर आनंद सरोवर में एक नये वास्तु का अनावरण हुआ। दादी जानकी जी, भ्राता निर्वैर भाई , भ्राता रमेश भाई इन वरिष्ठ भाईयोंके उपस्थिती में हुआ।

प्रथमतः दादी जानकी जी और निर्वैर भाई जी ने शिलान्यास का अनावरण किया। फिर वास्तु के प्रवेशद्वार पर रिबन काटकर वास्तु प्रवेश किया गया। उस समय रमेश भाई जी, निर्वैर भाई जी, मुन्नी दीदीजी, भरत भाई जी, मृत्युंजय भाई जी विशेष तौर पर उपस्थित थे।

इस भव्य वास्तु का नामकरण *अमृतकलश* ..किया गया। वास्तु को आज के दिन शिवबाबा के झंडो से और फुलोंसे सुशोभित किया गया था।

7 मंजिल की इस

केक काँटते हुये दादी जानकी जी, रतनमोहीनी दादी, रमेश भाई, निर्वेर भाई और अन्य

सभा को संबोधित करते हुये सभी दादीयाँ और अन्य वरिष्ठ भाई.

सभा को संबोधित करते हुये सभी दादीयाँ और अन्य वरिष्ठ भाई.

अमृतकलश वास्तु देखने में बहुत की सुंदर और भव्य है। अंदर प्रवेश करते ही इसकी विशालता पता चलती है । खासतौर पर कन्स्ट्रक्शन विभाग के चीफ इंजिनिअर भ्राता भरत भाई और उनके सहयोगीयों ने विशेष डिझाईन बनाकर इस वास्तु को खडा किया है।

तिसरे तस्वीर में उपर से ली गई तस्वीर इसकी सुंदरता कोबयांन करती है।

अंदर प्रवेश करते समय नारियल फोडकर वास्तु के भीतर सभी दादीयों और वरिष्ठ भाई योंने प्रवेश किया ।

फिर बादमें विशेष केक बना गया था, उसे काटकर उद्घाटन उत्सव मनाया गया ।

तत्पश्चात रिसेप्शन के हॉल में सभी दादीयों ने अपने विचार व्यक्त किये । दादी जानकी जी, दादी रतनमोहीनी जी, दीदी मोहीनी जी, मुन्नी दीदीजी, भ्राता निर्वेर भाई जी, रमेश भाई जी, भरत भाई जी, करूणा भाई जी, मृत्युंजय भाई जी इन सभी ने संक्षेप

वास्तु की सजावट बाहर से इस प्रकार से नजर आ रही थी ।

बाबा के कमरे में योग करते हुये दादीयाँ और साथ में भरत भाई जी.

में संबोधित किया ।

दादी जानकी जी ने इस समय उन सभी इंजिनिअर और उनके संगे साथी जिन्होंने बाबा को साथ रखकर जो कार्य किया उसकी सराहना कि । और बाबा की कमाल है, बाबा वंडरफूल है ऐसा कहकर बाबा को धन्यवाद दिया ।

करिब 1 हजार के उपर लोगो का ॲकोमडेशनकी सुविधा इस वास्तु में है।

यहाँ पर किचन में जाकर सभी बाबा को याद करके किचन का भी शुभारंभ किया ।

बाद में बाबा के कमरे में जाकर दादीयों ने दिये जलाकर उजाला किया । और वहाँ पर कुछ समय योग भी किया ।

इस समय सभी उपस्थित ब्रह्मावत्सों को टोली भी बांटी गई ।